E Content for the Student of Patliputra University.

Subject - Political Science

Class B.A.(Hons.) Part-I Paper - I

Topic - Karl Marx on State

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Political Sc.
R.R.S. College, Mokama

राजनीतिक विचारकों में कार्ल मार्क्स अपनी व्याख्या की मौलिकता तथा नये सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के संदेश के कारण काफी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे आधुनिक साम्यवाद जिसे वे वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं के प्रतिपादक, प्रचेता तथा व्याख्याकार हैं। उनके विचारों को मार्क्सवाद भी कहा जाता है। वे विश्व में बहुत अधिक अध्ययन करने तथा लिखने वाले कुछ विचारकों में एक हैं। इनके विचार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, इतिहास की आर्थिक व्याख्या, राज्य के प्रति दृष्टिकोण आदि से स्पष्ट किये जाते हैं। संक्षेप में, वे पूंजीवाद की समाप्ति तथा समानता पर आधारित पूर्ण साम्यवादी व्यवस्था की बात करते हैं। उनका परिकल्पित समाज शोषण मुक्त समाज होगा क्योंकि शोषक वर्ग समाप्त हो जायेंगे। इसके लिए सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में हिंसक क्रांति की वे बात करते हैं। इस प्रकार मार्क्स का सिद्धांत विश्व के बहुत बड़ी आबादी के लिए आशा की किरण तथा उम्मीदों का सम्बल रहा है।

राज्य संबंधी विचार -

मार्क्स का राज्य संबंधी विचार को अध्ययन राज्य के तीन चरणों के संदर्भ में किया जा सकता है।

प्रथम चरण - साम्यवादी क्रांति के पूर्व राज्य की स्थिति - मार्क्स साम्यवादी क्रांति के पूर्व के राज्य को पूंजीपतियों के हितों में शोषण का प्रमुख साधन मानता है। इसे मार्क्स के अनुसार

पूँजीपति वर्ग, जिसे वह बुर्जुआ वर्ग कहता है अपने हित में राज्य रूपी संस्था का निर्माण किया। राज्य के कानून, कानून को लागू करने वाली संस्था, पुलिस, सेना, पदाधिकारी सभी राज्य द्वारा नियंत्रित होते हैं। इसके माध्यम से राज्य पूँजीपति वर्ग के हितों की रक्षा करता है तथा उसके विरुद्ध उठने वाली आवाज जो शोषित वर्ग के द्वारा किया जाता है, को राज्य की शक्ति द्वारा दबाया जाता है।

2. द्वितीय चरण - सर्वहारा वर्ग की क्रांति - मार्क्स के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था में शोषक वर्ग के अत्याचार एवं शोषण के विरुद्ध शोषित वर्ग (सर्वहारा वर्ग) संगठित होकर क्रांति कर देगा। इस क्रांति में दुनिया के मजदूर एक साथ होंगे। मार्क्स का नारा था - "दुनिया के मजदूरों एक हो तुम्हारे पास खोने के लिए तुम्हारी दासता के सिवा कुछ नहीं है।" साम्यवादी दल इस क्रांति में दिशानिर्देश तथा नेतृत्व देंगे। मार्क्स को उम्मीद है कि क्रांति की इस प्रक्रिया में छोटे-छोटे पूँजीपति सर्वहारा वर्ग का साथ देंगे और अन्त में पूँजीपति वर्ग का नाश होगा। इस प्रकार सर्वहारा वर्ग का शासन स्थापित होगा।

3. तृतीय चरण - सर्वहारा वर्ग की तानाशाही - मार्क्स की परिकल्पना है कि अन्तिम रूप में राज्य की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, वह स्वयं विलुप्त हो जायेगा, किन्तु संक्रमण काल के लिए सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के रूप में राज्य का अस्तित्व कायम रहेगा। इसकी आवश्यकता इसलिए है कि नई व्यवस्था (साम्यवादी व्यवस्था) के विरोधी संगठित होकर इसका नाश न कर दें। इस चरण में व्यक्तिगत संपत्ति का प्रावधान समाप्त होगा। राज्य शोषण का साधन नहीं बल्कि नयी व्यवस्था को कार्य रूप देने में सहायक होगा। इस व्यवस्था में जो

पुरानी व्यवस्था का समर्थक होगा या नई व्यवस्था के विरुद्ध किसी षड्यंत्र में शामिल होगा उसे सख्त से सख्त दंड देने में कोई कोताही नहीं की जायेगी।

4. <u>साम्यवादी राज्य की स्थापना</u> – मार्क्स की परिकल्पना है कि राज्य जब सर्वहारा वर्ग की तानाशाही में कार्य करने लगेगा तो कोई शोषक या शोषित नहीं रहेगा। उत्पादन और वितरण के साधन पर किसी का व्यक्तिगत नियंत्रण नहीं रहेगा। सारी चीजें समाज की रहेगी। समाज ही उत्पादन करेगा, वितरण करेगा, उपभोग करेगा। आवश्यकतानुसार कोई भी कार्य करेगा। इसके परिणाम स्वरूप उत्पादन काफी होगा, विकास का कार्य काफी होगा तथा सामानों की प्रचुरता के कारण सभी को किसी चीज की कमी नहीं होगी। अर्थात वितरण की व्यवस्था कोई समस्या नहीं होगी। मार्क्स के अनुसार "<u>सभी लोग अपनी क्षमता के अनुसार करेंगे तथा आवश्यकता के अनुसार उपभोग करेंगे।</u>"

राज्य को इस अवस्था में आने के साथ मार्क्स के अनुसार शोषण नहीं होगा, झगड़े बंद हो जायेंगे पुलिस, कचहरी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, सरकार तथा राज्य की आवश्यकता भी समाप्त समझी जायेगी। ऐसी स्थिति में राज्य को समाप्त नहीं किया जायेगा, बल्कि राज्य स्वतः विलुप्त हो जायेगा।

इसप्रकार शोषण हीन समाज ही मार्क्स के अनुसार साम्यवादी राज्य होगा।

मार्क्स ने अपने राज्य संबंधी सिद्धांत को अपने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के "निषेध का निषेध" तथा <u>वर्ग संघर्ष</u> के सिद्धांत पर आधारित कर विकसित किया।

मार्क्स के अनुसार परस्पर विरोधी तत्व तथा उनके बीच संघर्ष ~~प्रकृति~~ प्रकृति का नियम है। राज्य में भी पूंजीपति वर्ग तथा सर्वहारा वर्ग परस्पर विरोधी वर्ग होते हैं, जिनके बीच संघर्ष अवश्यंभावी है। इसीप्रकार निषेध का निषेध सिद्धांत के आधार पर मार्क्स – वाद (Thesis), प्रतिवाद, (Antithesis) तथा संवाद (Synthesis) का विचार प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार पूंजीवादी राज्य, वाद है, ~~संघर्ष~~ संघर्ष के परिणाम स्वरूप, सर्वहारा वर्ग की तानाशाही, प्रतिवाद तथा राज्य विहिन समाज संवाद का उदाहरण है। वह इसे गेहूं के पौधे से समझाने का प्रयास करता है, गेहूं का बीज, वाद, पौधा प्रतिवाद तथा पौधे को पुनः विलुप्त हो जाना, संवाद है।

मार्क्स इसे, राज्य विहिन समाज को आदिकालीन साम्यवादी समाज संरचना से जोड़कर देखता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि मार्क्स का राज्य संबंधी दृष्टिकोण एक आदर्श की परिकल्पना है। सोवियत संघ, चीन आदि तथाकथित साम्यवादी राज्यों में मार्क्स की परिकल्पित सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के नाम पर शासक वर्ग की तानाशाही की स्थापना तो की गई, किन्तु राज्य विहिन समाज के निर्माण की ओर कोई कदम नहीं उठाया गया। बल्कि, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से तुंग के द्वारा मार्क्स के विचारों की व्याख्या अपनी सुविधा के अनुसार की गई।